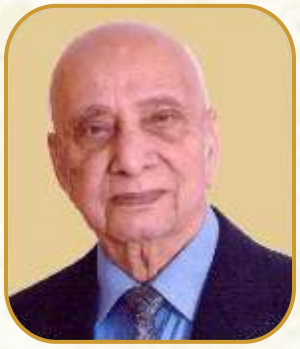

SHRI PRAN KISHORE KAUL

Shri Pran Kishore Kaul besides being a playwright and director is an eminent novelist too. His Kashmiri novel Sheen Ta Vatapod won the Sahitya Academi Award in 1990. He has translated the same into English which has been published under the title Sheen. His other novel Gul Gulshan Gulfam, considered as an epic in Kashmiri prose when adapted by him for Doordarshan, created history in Indian television. Pioneer in film making too in Kashmir, Shri Kaul directed the first ever feature film in Kashmiri language, "Mainzraat"

2. Born on January 23, 1926, Shri Kaul graduated from The Punjab University, Lahore, Shri Kaul is one of those living legends who had brought a cultural revolution in Kashmir in late forties. Father of modern theatre in Kashmir Shri Pran Kishore (his pen name) has introduced different genres of theatre besides plays, like opera, shadow play and musicals in the state of Jammu & Kashmir. As an actor, director, playwright, novelist, film maker, broadcaster and painter Shri Kaul has been making a valuable contribution to the field of performing arts and literature for nearly seventy years. His love for theatre ran parallel to his love for the sound media as Senior Producer of plays and features in All India Radio. The number of plays he directed for stage is long and has been trend setters in stage craft. Many of them have been staged in many states in the country, produced for the J& K Academy of Art Culture & Lnguages, thus strengthening the cultural bond of Kashmir with rest of the country.

3. As Senior Producer, All India Radio, Shri Kaul has produced more than 2000 radio plays, documentaries and features during his tenure there. Many of his productions have been selected for broadcast in the National Programmes of All India Radio and have won Akashvani Annual Awards too. His Radio documentary Water & life was selected by All India Radio for the Prix Italia XXX festival held in Milan, Italy in 1978 and in the same year it was A.I.R's entry for Asian Broadcasting Union.

4. Shri Kaul has received many prestigious National & International awards and honours during his seventy years in performing arts & literature. Some of them are: State Award by the Government of Jammu & Kashmir for outstanding contribution in the field of performing arts, Robe of Honour by the Jammu & Kashmir Academy of Art Culture & Languages for development of drama and theatre, Robe of Honour by the Kashmir University, for the development of Urdu drama, Sahitya Akademi Award 1989, National Film Award for best Regional feature film Mainzraat 1965, nominated International Jury Member for PRIX Italia XXX held in Milan Italy & Indian Delegate for The General Council of Prix Italia 1978, Jury Member, Indo-Afro short film festival held by Film Institute Of India, Former member, Sangeet Natak Akademi, Former Member North Zone Cultural Centre, Leader and Director of the Cultural Delegation to the 12th Festival of Asian Arts held in Hong Kong, 1985. He is Former President Theatre Federation of Kashmir and Member, Jammu & Kashmir Academy of Art Culture & Languages. He also received Painting Award in All India Artists competition 1962.



श्री प्राण किशोर कौल

श्री प्राण किशोर कौल, एक नाटककार और निर्देशक होने के अलावा एक प्रख्यात उपन्यासकार भी हैं। आपके कश्मीरी उपन्यास-शीन-ता-वातापोद ने 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता था। आपने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया था जिसे 'शीन'शीर्षक के तहत प्रकाशित किया गया है। आपके दूसरे उपन्यास-गुल-गुलशन-गुलफाम को कश्मीरी गद्य में महाग्रंथ का दर्जा हासिल है तथा जब इसे आपके द्वारा दूरदर्शन के लिए रूपांतरित किया गया तो इसने भारतीय टेलीविजन में इतिहास बना दिया। कश्मीर में फिल्म बनाने में अग्रणी रहकर आपने कश्मीरी भाषा में अब तक की पहली फीचर फिल्म "मैंजरात" का निर्देशन किया।

2. आपका जन्म 23 जनवरी, 1926 को हुआ था। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अपनी स्नातक की पढ़ाई की थी। आप उन जीवित महापुरूषों में से एक हैं, जो चालीस के दशक के अंत में कश्मीर में एक सांस्कृतिक क्रांति के वाहक बने। कश्मीर में आधुनिक रंगमंच के जनक श्री प्राण किशोर (आपका साहित्यक उपनाम) ने जम्मू एवं कश्मीर राज्य में गीति नाट्य, छाया नाट्य तथा संगीतज्ञों जैसे नाटकों के अतिरिक्त रंगमंच की विभिन्न शैलियों को ईज़ाद किया। एक फनकार, निर्देशक, नाटककार, उपन्यासकार, फिल्म निर्माता, प्रसारक और चित्रकला के रूप में आप लगभग 70 वर्षों से कला और साहित्य निष्पादन के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। रंगमंच के प्रति आपका प्यार, आकाशवाणी में नाटक एवं फीचर फिल्मों के वरिष्ठ निर्माता के तौर पर साउन्ड मीडिया के प्रति आपके प्यार के साथ-साथ चलता रहा। आपने रंगमंचपर जिन नाटकों का निर्देशन किया है उनकी संख्या बहुत बड़ी है और ये रंगमंच के शिल्प में ट्रेन्ड सेटर्स रही हैं। इनमें से कई एक का देश के कई राज्यों में मंचन किया गया है, और चूंकि इनका निर्माण जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के लिए किया गया है, अत: इससे कश्मीर के शेष भारत के साथ सांस्कृतिक संबंध मजबूत हो रहे हैं।

3. आकाशवाणी में एक वरिष्ठ निर्माता के रूप में आपने अपने कार्यकाल के दौरान 2000 से भी अधिक नाटकों, डाक्यूमेटरीज एवं फीचर्स का निर्माण किया है। आपके कई एक प्रोडक्शंस को आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रसारण के लिए चुना गया है तथा इन्होंने आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार भी जीते हैं। आपकी रेडियो डॉक्यूमेंटरी- 'वाटर एंड लाइफ' को आकाशवाणी द्वारा वर्ष 1978 में मिलान, इटली में आयोजित प्रिक्स इटैलिया 30वें फैस्टिवल के लिए चुना गया था और उसी वर्ष एशियन ब्राडकास्टिंग यूनियन के लिए यह आकाशवाणी की प्रविष्टि भी थी।

4. 70 वर्षों की कला एवं साहित्य की सेवा के दौरान आपको कई एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए। इनमें से कुछ हैं,जैसे - कला प्रस्तुतियों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने के लिए जम्मू एवं कश्मीर की सरकार द्वारा राज्य पुरस्कार, नाटक एवं रंगमंच के विकास के लिए जम्मू एवं कश्मीर कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी द्वारा रोब ऑव ऑनर, उर्दू नाट्य कला के विकास के लिए कश्मीर विश्वविद्यालय द्वारा रोब ऑव ऑनर, साहित्य अकादमी पुरस्कार 1989, सर्वोत्तम क्षेत्रीय फीचर फिल्म मैंजरात के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 1965, मिलान इटली में आयोजित प्रिक्स इटैलिया XXX के लिए नामित अंतरराष्ट्रीय ज्यूरी सदस्य एवं प्रिक्स इटैलिया, 1978 की महापरिषद के लिए भारतीय प्रतिनिधि, भारतीय फिल्म संस्थान द्वारा आयोजित इन्डो-ऐफ्रो लघु फिल्मोत्सव के लिए ज्यूरी सदस्य, संगीत नाटक अकादमी के पूर्व सदस्य,1985 में हांग-कांग में आयोजित 12वें एशियाई कला उत्सव के लिए सांस्कृतिक शिष्ट मंडल के प्रमुख एवं निदेशक जैसे पुरस्कार एवं सम्मान शामिल हैं। आप थिएटर फेडेरेशन ऑव कश्मीर के पूर्व अध्यक्ष और जम्मू एवं कश्मीर कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी के सदस्य हैं। आपको अखिल भारतीय कलाकार प्रतियोगिता, 1962 में पेंटिंग- पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।